दैनिक भास्कर
रविवार, 14 फरवरी 2021 नोएडा

आस्था व श्रद्धा के पीछे मान्यताएं

गीतांजलि सक्सेना

जीवनशैली

सप्ताह के दिनों का अपना एक स्वरूप है। उसे सोम से रविवार का नाम देकर परिभाषित भी किया गया है। हमारे जीवन का चक्र और हमारी जिंदगी की गाड़ी इन्हीं के इर्दगिर्द घूमती है। सप्ताह के दिनों से बने महीने ... और बने साल। यहां कोई गणित की क्लास नहीं होने वाली है। यूं तो हर दिन का हमारी जीवनशैली में अहम योगदान रहता है, क्योंकि प्रकृति की प्रक्रिया के तहत हर शख्स की दिनचर्या में इनका अपना महत्व भी रहता है।

हमारे धर्म में सप्ताह का प्रत्येक दिन एक हिन्दू भगवान को समर्पित होता है, यह हम सब जानते हैं। जैसे सोम भगवान शिव, हनुमान मंगल, तो बुध गणेशजी, गुरुवार भगवान विष्णुजी, शुक्रवार आदिशक्ति को, शनिवार शनिदेव और रविवार सूर्य देव को समर्पित है। सब देवताओं का मंदिरों में उस दिन विशेष देव की पूजा की जाती है। उस दिन खास पूजा और उपवास का आयोजन भी किया जाता है। हर उत्सव व त्यौहार मनाने की परंपरा हिन्दू पंचांग और तिथि के अनुसार निश्चित की जाती है।

दिलचस्प बात यह है कि जब आस्था और श्रद्धा के पीछे मान्यताएं जुड़ जाती हैं, तब इन विशेष दिनों का महत्व अधिक हो जाता है। जैसे दैवीय शक्ति की उपासना से आप की मनोकामना पूरी होती है। बहुत लोगों का यह भी मानना है कि सप्ताह का हर दिन एक खास रंग के वस्त्र पहनने से उनके इष्ट देव प्रसन्न होते हैं। इस तरह वह खास दिन अति विशिष्ट हो जाता है।

किन्तु यहां जिक्र उन विशेष दिनों का किया जा रहा, जिन्हें दिए गये नाम या डे से जाने पहचाने जाते हैं, जिसकी परिभाषा आम दिन से भिन्न रहती है। हर महत्वपूर्ण दिन विशेष होता है, और उसकी विशेषता पन्नों में दर्ज रहती है। यह दिवस या दिन एक कैलंडर वर्ष में होने वाले महत्वपूर्ण दिनों की सूची होती है, जिन्हें हम स्मृति के रूप में जश्न के रूप में मनाते हैं।

विशेष दिन का महत्व ...छिपा है, उसकी विशेषता में

इतिहास के पन्नों में लिखी अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं की तिथियों को हम सभी ने अपनी परीक्षाओं को पास करने के लिए तैयारी के दौरान रटने की प्रक्रिया का आमना सामना किया होगा। राजनीतिक घटनाक्रम को जानने और समझने के लिए इन्हें याद करना पड़ता था। इतिहास में दर्ज वे सब तिथियां ऐतिहासिक तथ्यों को प्रदर्शित करती हैं, जिन्हें हम आज भी उन महत्वपूर्ण दिनों को बदस्तूर याद करते हैं। उस दिन को उत्सवों के रूप में मनाने के लिए प्रतिबंध भी रहते हैं। चाहे वह गाँधी जयंती हो या स्वतंत्रता दिवस इत्यादि। देशवासियों के लिए इन समारोह को आयोजित करने के अनेकों अवसर प्राप्त हैं।

कुछ विशेष दिन और उनकी तिथियां व्यक्तिगत होती हैं, जिन्हें हम अपनी डायरी में दर्ज किए रहते हैं, फिर मौके पर अपने प्रिय साथी, मित्रों और परिवार के सदस्यों, सम्बन्धियों को उनकी खुशियों में शामिल हो कर अपनी उपस्थिति से या उन्हें याद करके मनाते हैं। अनेकों लोग ऐसे भी हैं, जो पूरी कोशिश करते हैं, कि दूसरों को उनके विशेष दिन पर याद करके खुशियां दें। निस्संदेह कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो सब दिन समान हैं, ऐसा ही विश्वास करते हैं। उन्हें दूसरों की खुशियों में शामिल होते हुए भी कभी नहींदेखा जाता है। यकीन मानें, किसी की मदद और उसको खुशी देने में जो आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है, इसका अहसास उस पल के अनुभवों से ही होता है। इसलिए इसे हलके से ना लें, अभ्यास अवश्य करें।

हमारा देश विविधताओं व विभिन्नता से भरपूर है, जहाँ अनेकों धर्मों के लोगों बसते हैं। हिन्दू धर्म की तरह हर धर्म ग्रंथों में सप्ताह का हर दिन उनके गुरु, संत उनकी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े होते हैं। कई दशकों से आधुनिक पश्चिमी सभ्यता में पनपे विभिन्न नामों से प्रचलित डेज दिवस का प्रभाव हमारी संस्कृति में भी देखने को मिलता है। इनकी सूची की संख्या में ऐसे अनेकों नाम यूं ही जुड़ते जा रहे हैं। जैसे फांदर डे, मंदर डे, फ्रेंडशिप डे, थैंक्स गीविंग डे इत्यादि। आज के बदलते समाज में ये डेज इन दिवसों की जगह विशेषकर युवा पीढ़ी की जीवन शैली का हिस्सा बन गये हैं। फेसबुक व ट्यूटर के काल में इस व्यवस्था को समाज के बदलते स्वरूप के रूप में देखा जाना चाहिए। इसका सकारात्मक पहलू यह भी है, कि युवाओं को अपने करीबी और दूसरे लोगों के प्रति, चाहे वे किसी वर्ग विशेष से हो, सब के प्रति आभार, आदर और अपनी भावनाओं को प्रकट करने में मददगार सिद्ध हो रही है। हममें से कई लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपने माता-पिता या करीबी से अपनी भावनाओं को साझा करने के लिए शायद ही किसी खास दिन की जरूरत महसूस की हो।

पादरी वैलेंटाइन को इसी दिन फांसी पर चढ़ा दिया गया था। उस दिन से हर साल इस दिन को प्रेम की अभिव्यक्ति का वार्षिक दिन और संत की याद में मनाया जाता है।

दिवसों की श्रृंखला में प्रचलित संत वैलेंटाइन डे ने काफी लोकप्रियता हासिल की है। रोम में जन्मा यह डे यानि आपसी प्रेम का दिन को मनाने का चलन दुनिया भर के देशों में हर साल 14 फरवरी को सेंट वैलेंटाइन की याद में मनाया जाता है। माना जाता है कि वह प्यार करने वाले जोड़ों की गुप्त शादी-ब्याह कराने में मदद करते थे। उस सदी के सम्राट क्लॉडियस नेजो संत की इस विचारधारा के खिलाफ थे। पादरी वैलेंटाइन को इसी दिन फांसी पर चढ़ा दिया गया था। उस दिन से हर साल इस दिन को प्रेम की अभिव्यक्ति का वार्षिक दिन और संत की याद में मनाया जाता है। यह भी एक विशेष दिन ही है, जो पश्चिमी संस्कृति में पनपा किसी को याद करने के लिए ही मनाया जाता है।

आज वैलेंटाइन का दिन उन जोड़ों के लिए अपने प्यार का इजहार करने का एक अनोखा अवसर है। मौका हाथ से ना जाते हुए, इस स्पेशल दिन पर युवा अपने साथी से दिल की बात जुबां पर लाकर उसके दिल में जगह बनाए। अनेक देशों में इसे मित्रों को याद करने के लिए भी होता है। 17वीं सदी से आज इस सदी में इंटरनेट के चलन के साथ इस दिन को मनाने के नए तरीकों में व्यावसायिक तस्वीर की झलक इसकी लोकप्रियता को दर्शाता है। प्रेम, उल्लास से भरा इस दिन में डे लग जाने से क्या इसके महत्व में कमी आती है? नहीं। यह जरूर हो सकता है कि कुछ तबकों के दिलों में इसकी जगह ना बन पाई हो। उस वर्ग का इस दिन को देशकी परम्पराओं के विरोध में देखना कतई सही नहीं होगा। बस इस दिन के बहाने ही सही, जश्न मनायें, जी भर कर के जीयें, प्रेम बांटें, बड़ों को, छोटों को, असहाय, निर्बल को उपहार देकर खुशियाँ समेटने का प्रयास करें। हमें यह भी नहीं भूलना है, कि कोविड़ काल के रहते सब उत्सवों को सुरक्षित मापदंडों का पालन करते हुए मनाना होगा। इन हालातों में उदारता का परिचय देते हुए, सबकी खुशियों में सम्मिलित होना चाहिये। इंसानी भावनाओं का आदर करना ही, हिन्दू संस्कृति का अमूल्य हिस्सा है।

बहार आई, दी दस्तक बसंत में, बसंती सरसों की भीनीं खुशबू,
रंग बिरगें फूलों से लदी बेल-लताएं, महक उठे बाग, घर आंगन,
आलोकित आनंद, अनोखी छटा, प्रकृति के नए रंग, पूरे शबाब में।
मौसम हुआ सुहावना, थोड़ा रूमानी, एक अजब सी खुमारी है आई,
सरस्वती पूजा है करनी, बसंती चोला में, हो गेंदे फूलों से ईश्वर श्रृंगार।

(वरिष्ठ लेखिका)